तपोव्रती

वैदिक गर्जना

विशेषांक

वैदिक गर्जना
विशेषांक
(मई, जून, जुलाई २०२२)

तपोव्रती

डॉ. ब्रह्ममुनि जी
गौरव ग्रंथ

संपादक

डॉ. नयनकुमार आचार्य ९४२०३३०१७८

सह संपादक

प्रा. ओमप्रकाश होळीकर
राजवीर शास्त्री
ज्ञानकुमार आर्य
डॉ. अरुण चव्हाण

प्रकाशक

राजेन्द्र दिवे ९८२२३६५२७२
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

तपोव्रती

डॉ. ब्रह्ममुनि जी

गौरव ग्रंथ

वैदिक गर्जना

मासिक

(मई, जून, जुलाई २०२२)

प्रकाशन तिथि

- **डॉ. ब्रह्ममुनि जी गौरव समारोह**
  दि. १७ अप्रैल २०२२

प्रकाशक

- **गौरव समिति**
  महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
  परली वै. जि. बीड

- © प्रकाशकाधीन

संगणकीय टंकलेखन

- **अभिज्ञ अनंत लोखंडे,** लातूर

मुखपृष्ठ :

- **आई डिजिटल ग्राफिक्स,** लातूर

मुद्रण :

- **आर्टी ऑफसेट प्रिन्टर्स,** लातूर

ग्रन्थ संख्या :

- **१५००**

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
२४)	आदर्श व्यक्तित्व	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	४२
२५)	समर्पित व्यक्तित्व	डॉ. तानाजी आचार्य	४४
२६)	हमारे सुग्रीव भैया	वेदमुनि वेदालंकार	४६
२७)	पारम्परिक मिथक को.....	प्रो. ओमप्रकाश होलीकर	४८
२८)	आदर्श विलक्षण व्यक्तित्व	जयसिंह गायकवाड	५३
२९)	वैदिक आदर्शों के परिचायक	बृजेश शास्त्री	५५
३०)	महाराष्ट्र आर्य समाज के नवनिर्माता	पं. विश्वनाथ शास्त्री	५७
३१)	अलौकिक प्रतिभा के धनी	योगमुनि	५८
३२)	हमारे कर्मठ सहयोगी	उग्रसेन राठौर	६०
३३)	पितृस्थानीय मार्गदर्शक गुरु	जुगलकिशोर लोहिया	६३
३४)	अद्वितीय रसायन	प्रा. डॉ. अखिलेश शर्मा	६६
३५)	प्रखर सत्यानुगामी व्यक्तित्व	प्रशांतकुमार शास्त्री	६८
३६)	आर्य समाज के संवर्धक	शंकरराव मोरे	७०
३७)	वैदिक विचारों के सम्पोषक	डॉ. वीरेंद्र शास्त्री	७२
३८)	धैर्यधुरन्धर व्यक्तित्व	आचार्य सत्यन्द्र विद्योपासक	७४
३९)	अनुशासित व्यक्तित्व	सौ. लीलावती रा. जगदाळे	७५
४०)	तपस्वी कर्मयोगी	डॉ. विनोदकुमार 'वेदार्य'	७७
४१)	सभा की आन–बान-शान	चन्द्रकान्त वेदालंकार	८०
४२)	उम्मीद की नई रोशनी	जयशील मिजगर	८१
४३)	नियम ही जिनके गुरु है	शिवराज पाटिल शास्त्री	८४
44)	My Inspiriation Dr. Kale	Dr. Sivraj Dharane	86
45)	A Living Spiritual Legend	Prof. Sharad Dumane	87

मराठी विभाग

१)	स्वामी दयानंदाचा खरा शिष्य	डॉ. जे. एम. वाघमारे	८९
२)	कृतिशील आर्यपुरुष	डॉ. सोमनाथ रोडे	९५
३)	माझ्या जीवनाचे शिल्पकार	पद्मश्री डॉ. तात्याराव लहाने	९७
४)	एक अनोखे व्यक्तिमत्त्व	प्राचार्य रमेश ठाकुर	९९
५)	समर्पित व्यक्तिमत्त्व	सौ. सविता जोशी	१०३

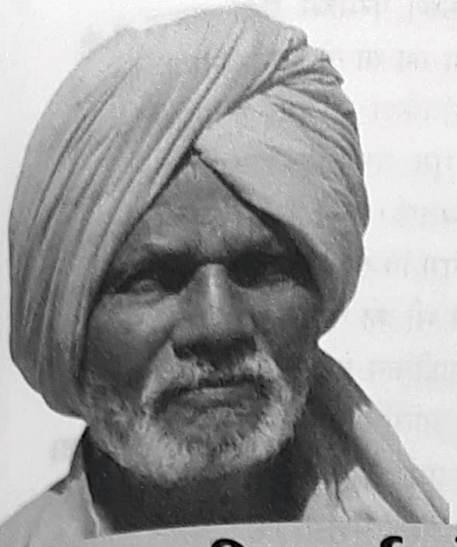

तपस्वी कर्मयोगी

■ प्रा. डॉ. विनोदकुमार 'वेदार्य'

ओ३म् त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।

(यजुर्वेद ३/६२)

वैदिक संस्कृत विद्यालय 'गुरुकुल रामलिंग वेदश्री' (येडसी) की स्थापना रामलिंग मंदिर में १९८४ में हुई थी। उस समय तत्कालीन जिलाधीश श्री. रामानंद तिवारी जी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री. दौलतराम चढ्ढा जी, प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार जी, स्वामी देवव्रत जी आदि महानुभाव पधारे थे। उस समय मेरी आयु मात्र ८-९ वर्ष की थी। बड़ों से बात करने में हिचकिचाहट तो होती ही थी, उससे भी अधिक डर लगता था। हालाँकि आचार्य सुभाषचन्द्र जी, आचार्य नचिकेता जी (गोविन्द शास्त्री जी), कौशलेन्द्र शास्त्री जी, राजेंद्र शास्त्री जी, यशपाल शास्त्री जी आदि गुरुजनों के साथ कुछ-कुछ संवाद तो अवश्य कर लेता पर जो नए-नए अतिथि गुरुकुल में पधारते तो उनके सामने कुछ बोल नहीं पाता था।

डॉ. सुग्रीव बलीराम काले - 'ब्रह्ममुनी' जी को मैंने पहली बार गुरुकुल में सन् १९८५-८६ में देखा। एक दिन देखा कि श्वेत वस्त्रों में एक कर्मठ व्यक्ति ऊँची आवाज़ में कुछ चर्चा कर रहे थे। उनके स्वर से और बोलने की गति से हमारे सहपाठी विष्णुदेव जी, सोमदेव जी, वीरेन्द्र जी, रामचंद्र जी, सत्येन्द्र जी, अनिल जी, भीमसेन जी आदि कुछ सहमे हुए थे। कुछ पूछ-ताछ करने के बाद पता चला कि आप वैद्यनाथ महाविद्यालय, परली (वै.) के वनस्पतिशास्त्र विषय के प्राध्यापक हैं और गुरुकुल के सम्यक् परिचालन के लिए महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों से दान राशि लाने के और गायों की व्यवस्था के सिलसिले में बात कर रहे हैं। यही हमारे तपस्वी कर्मयोगी डॉ. सुग्रीव बलीराम काले - 'ब्रह्ममुनी' जी थे।

डॉ. सुग्रीव काले जी गुरुकुल में महीने में एक-दो बार आते रहते थे। एक बार सायंकाल के समय स्वामी व्रतानन्द जी हमें लाठी-काठी के पैंतरे सीखा रहे थे और स्वामी निगमानंद जी हमारा निरीक्षण कर रहे थे। ऐसे में अचानक डॉ. सुग्रीव काले जी सीढ़ियों के नीचे आ रहे थे। उनको देखते ही स्वामी व्रतानन्द जी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत करते हुए कहा, "आप आए, बहार आई!" पर डॉक्टर साहब ने स्वामी जी को ही डाँटते हुए कहा कि, 'स्वामी जी! कम से कम आप-जैसे

संन्यासियों के मुख से तो ऐसे फ़िल्मी गीत-संवाद की अपेक्षा नहीं है।' स्वामी निगमानंद जी ने बीच-बचाव करते हुए स्थिति को संभाल लिया। स्वामी निगमानंद जी एक पैर से अपाहिज थे। उनकी विनयशीलता के सामने डॉक्टर साहब कुछ ज्यादा बोल नहीं पाए। महाराज भर्तृहरि ने धीर व्यक्ति के जो लक्षण बताए हैं, वे सारे लक्षण डॉक्टर साहब के व्यक्तित्व में दिखाई देते हैं।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु व यथेष्टम्।।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

(नीतिशतकम्-श्लोक ७९ - महाराज भर्तृहरि)

जब गुरुकुल का स्थान परिवर्तन होकर दुर्गादेवी मंदिर की तलहटी में हमें आना पड़ा, तो बहुत-सी समस्याएँ आने लगी थीं। धाराशिव, लातूर, सोलापुर, बीड आदि जिलों के दानदाताओं की सहायता से कुछ समाधान तो हो रहा था, पर उतनी सहायता से रहने के लिए न निवास बनाए जा सकते थे और न हीं गायों के चारे का पूरा प्रबंध हो पाता था, ऐसे में डॉक्टर साहब बैलगाड़ियों में भरभर कर कहीं से चारा ले आते थे और स्वयं ही चारे रख-रखाव का प्रबंध भी कर देते।

हमारे पिताजी ने कुछ अपरिहार्य कारण से १९८८ में मुझे घर वापिस बुला लिया। मैंने भी अनिच्छा से गुरुकुल छोड़ दिया। कुछ दिन बाद डॉक्टर साहब धाराशिव में ही अपने गुरु हरिश्चंद्र गुरूजी (स्वामी श्रद्धानंद जी) के विचारों के प्रभावित हो कर 'मानवता संस्कार शिबिर' का आयोजन कर रहे थे। हम सभी भाई-बहन इस शिबिर में सम्मिलित हुए। डॉक्टर साहब के साढू और लोकप्रिय शिक्षक श्री. ज्ञानराव सालुंके जी का पूरा परिवार अर्थात् पुत्र श्री. रवींद्र सालुंके जी, बहु प्रा. सौ. अनार जी और पौत्र अमित जी एवं केदार जी उत्साह से सम्मिलित हुए। मानवता संस्कार शिबिर का स्थान जिला कारागृह के सामने स्थित अभिनव पाठशाला के आहाते में आयोजित किया गया था।

मैं जब रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय में बी. एस्सी. की शिक्षा पा रहा था तो हमारे वनस्पतिशास्त्र के अध्यापक श्री. ऋषिकेश बलवंत कवठे जी ने एक तासिका में अपने गुरु यानी कि डॉक्टर साहब के बारे में बहुत- सी यादें बताई। कैसे उन्होंने अपना शोधकार्य केवल दो वर्षों में पूरा किया था और एक अत्यंत दुर्लभ वनस्पति की खोज भी की थी। डॉक्टर साहब का चयन केनिया नामक अफ्रीकन देश की राजधानी नैरोबी के विश्वविद्यालय में अतिथि व्याख्यान के लिए हुआ था। वनस्पतिशास्त्र के एक अन्य अध्यापक डॉ. बले जी भी डॉक्टर साहब की बहुत प्रशंसा किया करते थे। यद्यपि गुरुकुल के दिनों में हमने डॉक्टर साहब के शोधकार्य के बारे में कुछ-कुछ सुना अवश्य था पर तब कुछ समझ में भी नहीं आता था। अब उनके कार्य की महत्ता अनुभव होनी लगी।

अध्यापन का आर्य करते हुए भी डॉक्टर साहब आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्य के लिए बहुत सारा समय देते थे। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्यालय पहले वाजेगाँव, जि. नांदेड में था। डॉक्टर साहब के प्रयासों से यह मुख्यालय परली (वै.) जि. बीड को स्थानांतरित हुआ। उन्होंने परली में एक नए गुरुकुल की भी नींव रखी। इस महान कार्य में स्वामी श्रद्धानंद जी, सोममुनी जी, नयनकुमार जी, वीरेंद्र जी आदि महानुभावों ने डॉक्टर साहब की सहायता की। डॉक्टर साहब के अथक परिश्रम से परली का गुरुकुल भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में आशातीत सफल भी रहा है।

मैं इधर बी. एस्सी. की पदवी प्राप्त करने के बाद हिंदी में एम्. ए. कर रहा था। हमारी अंग्रेजी की अध्यापिका सौ. अनार सालुंके जी के घर डॉक्टर साहब का आना-जाना होता रहता था। सौ. अनार सालुंके जी को एक नए महाविद्यालय का प्राचार्य नियुक्त किया गया था। मेरा एम्. ए. पूरा होने के बाद उन्हीं के नेतृत्व में मुझे हिंदी विषय के अध्यापक के रूप में चुना गया। १९

अगस्त, १९९९ के दिन मेरा साक्षात्कार संपन्न हुआ और २१ अगस्त, १९९९ से में अध्यापन कार्य करने लगा।

प्राचार्य सौ. अनार सालुंके जी से मुझे परली में आयोजित वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर के बारे में पता चला। इंग्लैंड के प्रवासी भारतीय आचार्य सोनेराव जी ने हमें आर्य पुरोहित बनने का विधिवत प्रशिक्षण दिया। पूरे शिबिर का उत्तरदायित्व डॉक्टर साहब की ओर ही था। वे प्रातः ४ बजे से लेकर रात १२ बजे तक किसी-न-किसी कार्य में व्यग्र ही दिखाई देते। पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर के समापन दिन हमें प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। जिसपर प्रशिक्षक आचार्य सोनेराव जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम और हस्ताक्षर थे। प्रमाणपत्र लेकर सभी प्रशिक्षणार्थी खुशी-खुशी अपने घर लौट गए। पर मैं वहीं खड़ा रहा। लगभग आधे घंटे के बाद डॉक्टर साहब का ध्यान मेरी ओर गया। उन्होंने आश्चर्य से मेरे इस वर्तन का कारण पूछा तो मैंने कहा कि, 'आप इस शिबिर के प्राण हैं और प्रमाणपत्र पर न आपका नाम है और न हीं हस्ताक्षर! इस प्रमाणपत्र को मैं तभी स्वीकार करूँगा जब आपके हस्ताक्षर होंगे।' पहले तो वे हँसे और बोले कि, 'मेरा कहीं नाम हो या हस्ताक्षर हो इसलिए मैं काम नहीं करता। कर्तव्य महत्त्वपूर्ण है नाम नहीं।' डॉक्टर साहब का पूर्ण आदर करते हुए मैंने भी अपना पहला सत्याग्रह आरम्भ किया। 'जब तक इस प्रमाणपत्र पर आपके हस्ताक्षर नहीं होंगे, मैं अपने घर वापिस नहीं जाऊँगा और न हीं अन्न-जल ग्रहण करूँगा।' इतना सुनते ही डॉक्टर साहब ने प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर किए और एक कार्यकर्ता से कहा कि इसे सत्वर बस स्टैंड पर छोड़ आओ।

डॉक्टर साहब के एक पुत्र श्री. विक्रम जी धाराशिव में उद्योजक के रूप में रहते थे। एम. आय. डी. सी. में उनके भवन पर जब भी कोई उत्सव मनाया जाता, तब मुझे पुरोहित के रूप में आमंत्रित किया जाता था। डॉक्टर साहब जब कभी भी धाराशिव आ जाते मुझे बुलावा भेजते थे और विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन भी करते। उन्होंने गृहस्थाश्रम छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर 'ब्रह्ममुनी' यह नया नाम धारण किया था। उन्होंने दो मराठी पुस्तकें लिखी थीं "मांसाहार का नको?" और 'धर्म आणि विज्ञान'! वे इन दोनों पुस्तकों का हिंदी अनुवाद प्रकाशित करवाना चाहते थे। आर्यसमाज धाराशिव के प्रधान, प्राचार्य गोविंदराव मैन्दरकर जी को यह गुरुतर कार्य सौंपा गया था। उन्होंने स्वयं "मांसाहार का नको?" का हिंदी अनुवाद किया और मुझे 'धर्म आणि विज्ञान' के अनुवाद का कार्य सौंपा। मैंने बड़ी प्रसन्नता से २-३ महीनों में यह अनुवाद कार्य पूरा किया। सन् २००८ में नई दिल्ली के 'विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद प्रकाशन' से 'धर्म और विज्ञान' शीर्षक से प्रकाशित हुई। आज तक मैंने मराठी से हिंदी में ६ पुस्तकें अनुदित की हैं। जिनकी सफलता का सम्पूर्ण श्रेय 'धर्म और विज्ञान' के अनुवाद के समय का स्व-प्रशिक्षण मानता हूँ। और इतना बड़ा अवसर देने के लिए डॉक्टर साहब के प्रति कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको आरोग्यसम्पन्न सौ वर्ष से भी अधिक दीर्घायु प्रदान करे। ऐसे तपस्वी कर्मयोगी के भव्य गौरव समारोह के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। इस समारोह के आयोजक डॉ. नयनकुमार आचार्य जी और डॉ. वीरेन्द्र आचार्य जी के नेतृत्व में यह गुरुतर कार्य अवश्य ही सफल होगा इस कामना के साथ अपने शब्दों को विराम देता हूँ।

धन्यवाद ! ■■

- व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
उस्मानाबाद

दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासंमेलन में डॉ. ब्रह्ममुनिजी का ओजस्वी सम्बोधन।

डॉ.श्री. ब्रह्ममुनिजी एवं श्री. राजेंद्रजी दिवे का सम्मान करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री. सुरेशचंद्रजी आर्य एवं महामंत्री श्री. प्रकाशजी आर्य।

डॉ.श्री. ब्रह्ममुनिजी के साथ आर्य समाज परली के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता।